اٰیاتها ٥ | ١٠٥ سُورَةُ الفِيلِ مَكِّيَّةٌ ١٩ | ركوعها ١

सूरए फ़ील मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِيۡلِ ؕ ۝١ اَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِيۡ

ऐ मह्बूब क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या ह़ाल किया[2] क्या उन का दाउं तबाही

تَضۡلِيۡلٍ ۙ ۝٢ وَّ اَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا اَبَابِيۡلَ ۙ ۝٣ تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ

में न डाला और उन पर परिन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं[3] कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से

مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۙ ۝٤ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ ۝٥ ع

मारते[4] तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)[5]

اٰیاتها ٤ | ١٠٦ سُورَةُ قُرَيۡشٍ مَكِّيَّةٌ ٢٩ | ركوعها ١

सूरए क़ुरैश मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

दरवाज़े बन्द कर के आतिशीं सुतूनों से उन के हाथ पाउं बांध दिये जाएंगे। **1 :** "सूरतुल फ़ील" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, छियानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** हाथी वालों से मुराद अब्रहा और उस का लश्कर है। अब्रहा यमन और ह़ब्शा का बादशाह था, उस ने सन्आ़ में एक कनीसा (यहूदो नसारा का इबादत ख़ाना) बनाया था और चाहता था कि ह़ज करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के यहीं आएं और इसी कनीसा का त़वाफ़ करें, अ़रब के लोगों को येह बात बहुत शाक़ थी, क़बीलए बनी किनाना के एक शख़्स ने मौक़अ़ पा कर उस कनीसा में क़ज़ाए ह़ाजत की और उस को नजासत से आलूदा कर दिया, इस पर अब्रहा को बहुत त़ैश आया और उस ने का'बे को ढाने की क़सम खाई और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर जिस में बहुत से हाथी थे और उन का "पेशरव" एक बड़ा अ़ज़ीमुल जुस्सा कोह पैकर हाथी था जिस का नाम मह्मूद था। अब्रहा ने मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर अहले मक्का के जानवर क़ैद कर लिये, उन में दो सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्तलिब के भी थे, अ़ब्दुल मुत्तलिब अब्रहा के पास आए थे बहुत जसीम व बा शकोह अब्रहा ने उन की ता'ज़ीम की और अपने पास बिठाया और मत़लब दरयाफ़्त किया। आप ने फ़रमाया : मेरा मत़लब येह है कि मेरे ऊंट वापस किये जाएं। अब्रहा ने कहा : मुझे बहुत तअ़ज्जुब होता है कि मैं ख़ानए का'बा को ढाने के लिये आया हूं और वोह तुम्हारा तुम्हारे बाप दादा का मुअ़ज़्ज़म व मोह्तरम मक़ाम है! तुम उस के लिये तो कुछ नहीं कहते अपने ऊंटों के लिये कहते हो! आप ने फ़रमाया : मैं ऊंटों ही का मालिक हूं उन्ही के लिये कहता हूं और का'बे का जो मालिक है वोह ख़ुद उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा। अब्रहा ने आप के ऊंट वापस कर दिये, अ़ब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को ह़ाल सुनाया और उन्हें मश्वरा दिया कि वोह पहाड़ों की घाटियों और चोटियों में पनाह गुज़ीन हों। चुनान्चे क़ुरैश ने ऐसा ही किया और अ़ब्दुल मुत्तलिब ने दरवाज़ए का'बा पर पहुंच कर बारगाहे इलाही में का'बे की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ की और दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर आप अपनी क़ौम की त़रफ़ चले गए। अब्रहा ने सुब्ह़ तड़के अपने लश्करों को तय्यारी का हुक्म दिया और हाथियों को तय्यार किया लेकिन मह्मूद हाथी न उठा और का'बे की त़रफ़ न चला, जिस त़रफ़ चलाते थे चलता था, जब का'बे की त़रफ़ उस का रुख़ करते थे बैठ जाता था। अल्लाह तआ़ला ने छोटे छोटे परिन्द उन पर भेजे जो छोटे छोटे संगरेज़े (पथ्थर) गिराते थे जिन से वोह हलाक हो जाते थे। **3 :** जो समुन्दर की जानिब से फ़ौज आई, हर एक के पास तीन कंकरियां थीं, दो दोनों पाउं में एक मिन्क़ार (चोंच) में। **4 :** जिस पर वोह परिन्द संगरेज़ा छोड़ते वोह संगरेज़ा उस के ख़ोद (जंगी टोपी) को तोड़ कर सर से निकल कर जिस्म को चीर कर हाथी में गुज़र कर ज़मीन में पहुंचता, हर संगरेज़े पर उस शख़्स का नाम लिखा था जो उस संगरेज़े से हलाक किया गया। **5 :** जिस साल येह वाक़िआ़ हुवा उसी साल इस वाक़िए के पचास रोज़ बा'द सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत हुई।